

विमानयानं रचयाम Summary Notes Class 6 Sanskrit Chapter 12

विमानयानं रचयाम पाठ का परिचय

इस पाठ में बच्चों के मन की विशाल कल्पना का दिग्दर्शन कराया गया है। साथ ही उनके मन में छिपी हुई सुन्दरता और परोपकार की तरफ भी संकेत किया गया है। बच्चे अपने मन की कल्पना को साकार रूप देने में किस प्रकार संलग्न हो सकते हैं। उसका भी निर्देश दिया गया है।

विमानयानं रचयाम Summary

इस पाठ में चार पद्य हैं। प्रथम श्लोक में कहा गया है कि आओ हम विमान की रचना करें और आकाश में स्वच्छन्द होकर घूमें। द्वितीय श्लोक में कहा गया है कि हम ऊँचे-ऊँचे वृक्षों और भवनों को लाँघकर आकाश में छलाँग लगाएँ। हिमालय पर्वत को भी पार करके चन्द्रमा पर कदम रखें। तृतीय श्लोक में बताया है कि हम सूर्य आदि ग्रहों को गिनकर तथा तारों से एक हार बनाएँ। चतुर्थ श्लोक में कहा है कि हम बादलों की कतार को लेकर लौटें और पृथ्वी पर आकर दीन दुःखियों की सहायता करें। इस कविता में कवि के उदात्त विचार अभिव्यक्त हैं।

विमानयानं रचयाम Word Meanings Translation in Hindi

(क) राघव! माधव! सीते! ललिते!

विमानयानं रचयाम।

नीले गगने विपुले विमले

वायुविहारं करवाम॥

शब्दार्थः (Word Meanings) :

ललिते!-हे ललिता (oh Lalita), विमानयानम्-हवाई जहाज़ को (aeroplane), रचयाम-बनाएँ (should make), गगने-आकाश में (in sky), विपुले-बहुत अधिक (विस्तृत) (expansive), विमले-स्वच्छ (में) (clear), वायुविहारम्-वायु में भ्रमण (flying in the sky), करवाम-करें (should do)।

सरलार्थ :

हे राघव! हे माधव! हे सीता! हे ललिता!

(हम सब) विमान (हवाई जहाज़) बनाएँ।

बहुत विस्तृत स्वच्छ नीले आकाश में

वायु विहार (भ्रमण) करें।।

(ख) उन्नतवृक्षं तुङ्ग भवनं

करान्त्वाकाशं खलु याम।

कृत्वा हिमवन्तं सोपानं

चन्द्रिलोकं प्रविशाम॥

शब्दार्थः (Word Meanings) :

उन्नतवृक्षम्-ऊँचे वृक्ष को (high tree), तुङ्गभवनम्-ऊँचे भवन को (high buildings), करान्त्वा -पार करके (crossing over), खलु-निश्चय से (surely), याम-जाएँ (should go), कृत्वा-करके (do), हिमवन्तम्-बर्फ को (की) (snow made), सोपानम्-सीढ़ी को (ladder), चन्द्रिलोकम्-चन्द्रलोक में (को) (moonland), प्रविशाम-प्रवेश करें (should enter)।

सरलार्थ :

ऊँचे वृक्ष, ऊँचे मकान को निश्चय से पार करके आकाश में जाएँ। बर्फ की सीढ़ी बना करके चन्द्रलोक में प्रवेश करें।

(ग) शुक्रश्चन्द्रः सूर्यो गुरुरिति

ग्रहान् हि सर्वान् गणयाम् ।

विविधाः सुन्दरताराश्चित्वा

मौक्तिकहारं रचयाम् ॥

शब्दार्थः (Word Meanings):

गुरुः-गुरु (बृहस्पति) (Jupiter), इति-इत्यादि (आदि) (et cetera), ग्रहान्-ग्रहों को (planets), गणयाम-गिने (should count), विविधाः-अनेक (many), सुन्दरताराः-सुन्दर तारों को (lovely stars), चित्वा-चुनकर (by picking up), मौक्तिकहारम्-मोतियों के हार को (pearl neckless), रचयाम-बनाएँ (should make)। सरलार्थः (हम) शुक्र, चन्द्र, सूर्य और गुरु आदि सभी ग्रहों को निश्चय से गिने। अनेक सुन्दर तारे चुनकर मोतियों के हार बनाएँ।

(घ) अम्बुदमालाम् अम्बरभूषाम्

आदायैव हि प्रतियाम् ।

दुःखित-पीडित-कृषिकजनानां

गृहेषु हर्षं जनयाम् ॥

शब्दार्थः (Word Meanings):

अम्बुदमालाम्-बादलों की पंक्तियों को (cloud-garland), अम्बरभूषाम्-आकाश की शोभा को (beauty of sky), आदाय-लेकर (taking), हि-निश्चय से (surely), प्रतियाम्-वापस लौटें (should return), दुःखित-दुखी (दुख से युक्त) (sad), पीडित-पीड़ा से युक्त (victim), कृषिकजनानाम्-किसानों के (farmers'), गृहेषु-घरों में (in houses), हर्षम्-प्रसन्नता को (in happiness), जनयाम्-उत्पन्न करें (should create)।

सरलार्थः :

(हम) निश्चय से बादलों की माला (पंक्तियों) को और आकाश की शोभा को लेकर ही वापस लौटें और दुख पीड़ा से युक्त किसानों के घरों में खुशी उत्पन्न करें।